टिप्पणी

25

साझेदारी फर्म का समापन

राकेश एवं मुकेश अच्छे मित्र थे। वे एक व्यावसाय चला रहे थे जो कि साझेदारी फर्म है। वे बहुत सफल थे। लोग उनके संबंधों से द्वेष करते थे। लेकिन एक दिन लोगों को पता चला कि उन्होंने व्यावसाय बंद कर दिया था। इस प्रकार से कुछ विषयों पर उनमें आपसी मतभेद उत्पन्न हो गए थे। साझेदारों के बीच मतभेद या पिछले कुछ वर्षों में हानि या न्यायालय के आदेश के कारण फर्म को बंद किया जा सकता है। हम कह सकते हैं कि साझेदारी फर्म का समापन हो गया है। इस पाठ में आप साझेदारी फर्म के समापन के संबंध में लेखाकरण की प्रक्रिया के संबंध में पढ़ेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात् आप :

- साझेदारी फर्म के समापन का अर्थ बता सकेंगे;
- साझेदारी का समापन एवं साझेदारी फर्म का समापन में अंतर कर सकेंगें;
- वसूली खाता, परिसंपतियों का विक्रय एवं दायित्वों के भुगतान का वर्णन कर सकेंगे;
- गैर अभिलेखित परिसंपतियों एवं दायित्वों के लेखाकरण को समझा सकेंगे;
- साझेदारों के पूंजी खाते, बैंक/रोकड़ खाता बना सकेंगें।

25.1 साझेदारी का समापन एवं साझेदारी फर्म का समापन

समापन शब्द का अर्थ अंत करना या समाप्त होना है। साझेदारी फर्म का समापन यह बताता है कि सभी साझेदारों के बीच संबंधों का पूर्ण अंत हो गया है। साझेदारी का समापन (साझेदार द्वारा सेवानिवृति, मृत्यु या दिवालिया होने के कारण) साझेदारों के संबंधों में बदलाव मात्र है न कि फर्म का अंत। साझेदारी का अंत निश्चित रूप से होगा, लेकिन पुनर्गठित फर्म निरंतर

टिप्पणी

इसी नाम के अंतर्गत चलती रहेगी। अतः साझेदारी के समापन को फर्म का समापन माना भी जा सकता है और नहीं भी लेकिन फर्म के समापन में साझेदारी का समापन अवश्य होगा। फर्म के समापन पर फर्म द्वारा चालित व्यवसाय समाप्त हो जाता है। क्योंकि इस पर परिसम्पत्तियों का विक्रय, दायित्वों का भुगतान एवं साझेदारों के दावों का निपटारा हो जाता है। सभी साझेदारों के मध्य साझेदारी के अंत को ही फर्म का समापन कहते हैं।

(i) समझौते द्वारा समापन : एक फर्म का समापन निम्न स्थिति में होता है :

- सभी साझेदारों की सहमति पर, या
- साझेदारी समझौते की शर्तों के अनुसार।

(ii) अनिवार्य समापन : एक फर्म का निम्न स्थितियों में अनिवार्य समापन होता है :

- जब सभी साझेदार या एक को छोड़कर सभी साझेदार दिवालिए हो गए हों या मानसिक संतुलन खो बैठे हों।
- जब व्यवसाय गैर-कानूनी हो गया हो।
- जब केवल एक को छोड़कर सभी साझेदार फर्म से सेवानिवृत्त होना चाहते हैं।
- जब सभी साझेदार या एक को छोड़कर सभी की मृत्यु हो गई हो।
- फर्म अनिवार्य रूप से भी समाप्त हो जाती है, यदि साझेदारी संलेख में निम्न में से किसी एक घटना के घटित होने से संबंधित प्रावधान हो :
  - (क) जितनी अवधि के लिए फर्म बनी है उस अवधि की समाप्ति हो गई हो।
  - (ख) उस विशेष उपक्रम या परियोजना की समाप्ति हो गई हो जिसके लिए फर्म बनाई गई हो।

(iii) सूचना द्वारा समापन : स्वैच्छिक साझेदारी की स्थिति में यदि कोई एक साझेदार दूसरे साझेदारों को लिखित सूचना दे तो फर्म का समापन हो सकता है।

(iv) न्यायालय द्वारा समापन : न्यायालय फर्म के समापन का आदेश निम्न स्थितियों में दे सकती है :

(क) जब कोई साझेदार मानसिक संतुलन खो बैठा हो।

(ख) जब कोई साझेदार, साझेदारी के कर्तव्य पूरा करने में स्थायी रूप से असमर्थ हो जाए।

(ग) जब कोई साझेदार फर्म के प्रबंध से संबंधित समझौते का जान बूझकर और लगातार उल्लंघन करे।

(घ) जब साझेदार के आचरण से फर्म के व्यवसाय पर विपरीत प्रभाव पड़े।

(ङ) जब साझेदार फर्म में अपना संपूर्ण हित किसी तीसरे पक्ष को हस्तांतरित कर दे।

(च) जब न्यायालय फर्म के समापन को ठीक व न्यायसंगत समझे।

टिप्पणी

साझेदारी का समापन और साझेदारी फर्म के समापन में अंतर

अभी तक आपने पढ़ा कि प्रवेश, सेवानिवृत्ति एवं मृत्यु के अवसर पर, वर्तमान साझेदारी समाप्त हो जाती है लेकिन फर्म का व्यवसाय एक नए समझौते के अंतर्गत चलता रहता है। जब फर्म दी गई परिस्थितियों में व्यवसाय को बंद करने का निर्णय लेती है तब यह समापन होगा। साझेदारी फर्म का समापन साझेदारी के समापन से भिन्न है।

फर्म के समापन का अर्थ है फर्म व्यवसाय को बंद कर दे और उसका कार्य बंद हो जाए। जबकि साझेदारी के समापन का अर्थ है पुराने साझेदारी समझौते का स्थगित होना एवं प्रवेश, सेवानिवृत्ति एवं मृत्यु के कारण, फर्म का पुनर्गठन होना। साझेदारी के समापन में शेष साझेदार व्यवसाय को एक नए समझौते के अंतर्गत चलाने का निर्णय लेते हैं।

पाठगत प्रश्न 25.1

उचित शब्द भरकर रिक्त स्थानों को पूर्ण कीजिए :

i. एक साझेदारी फर्म का समापन तब होता है जब फर्म की गतिविधियाँ ..... हो जाए।

ii. जब फर्म व्यवसाय को बंद करने का निर्णय लेती है तो यह ..... कहलाता है।

iii. ..... का समापन ..... के समापन से भिन्न है।

iv. फर्म का अनिवार्य ..... होगा जब सभी साझेदार या एक को छोड़कर सभी की मृत्यु हो गई हो।

v. फर्म का समापन ..... द्वारा होगा जब कोई साझेदार मानसिक संतुलन खो बैठा हो।

vi. फर्म का समापन ..... द्वारा होगा जब सभी साझेदार अपनी सहमति दें।

25.2 परिसम्पतियों एवं दायित्वों का लेखाकरण

जब साझेदार फर्म के व्यवसाय को बंद करने का निर्णय लेते हैं तब आवश्यक हो जाता है कि वह अपने खातों का निपटारा करें। इस उद्देश्य के लिए वे अपनी सभी परिसम्पतियों की बिक्री (रोकड़ एवं बैंक शेष के अतिरिक्त) अपने विरूद्ध दावों के निपटारा के लिए करते हैं। इस उद्देश्य के लिए एक अलग खाता खोला जाता है जिसे वसूली खाता (Realisation account) कहते हैं। वसूली खाता वह खाता है जिसमें सभी परिसम्पत्तियों (रोकड़ एवं बैंक अतिरिक्त) को उनके पुस्तक मूल्य पर हस्तांतरित किया जाता है एवं सभी बाह्य दायित्वों को उनके पुस्तक मूल्य पर हस्तांतरित किया जाता है।

टिप्पणी

यह दिखाता है कि परिसम्पत्तियों के विक्रय से कितनी राशि वसूल हुई एवं दायित्वों का निपटान कितनी राशि पर हुआ।

परिसम्पत्तियों के विक्रय एवं दायित्वों के निपटान का लेखा करने के लिए निम्न रोजनामचा प्रविष्टियां अभिलेखित की जाएगी :

1. परिसम्पत्तियों के हस्तांतरण पर : परिसम्पत्ति खातों को वसूली खाते में पुस्तक मूल्य पर हस्तांतरित करके बंद किया जाएगा।

वसूली खाता नाम
    परिसम्पत्ति खाता से (व्यक्तिगत)
(परिसम्पत्तियों का हस्तांतरण)

यह ध्यान रहे कि स्थिति विवरण के परिसम्पति पक्ष की निम्न मदों को वसूली खाते में हस्तांतरित नहीं किया जाएगा।

(अ) (i) अविभाजित हानि (लाभ-हानि खाते का नाम शेष)

(ii) अवास्तविक परिसम्पत्तियों (Fictitions assets) या आस्थगित आगम व्यय जैसे कि प्रारंभिक व्यय।

ऊपर दी गई सभी मदों को साझेदारों के पूंजी खाते में उनके लाभ विभाजन अनुपात में हस्तांतरित करके बंद किया जाएगा। इसके लिए यह रोजनामचा प्रविष्टि होगी।

साझेदार का पूंजी खाता नाम (व्यक्तिगत)
    लाभ-हानि खाता से
    अवास्तविक परिसम्पत्ति खाता से
(हानि एवं अवास्तविक परिसम्पत्तियों का हस्तांतरण)

(ब) हस्तस्थ रोकड़ एवं बैंक में रोकड़, रोकड़/बैंक खाते का आरंभिक शेष होगा।

(स) परिसम्पतियों के विरुद्ध प्रावधान एवं संचय को वसूली खाते में जमा करके बंद किया जाएगा।

रोजनामचा प्रविष्टि होगी :
संदिग्ध ऋण के लिए प्रावधान खाता नाम
अवयक्षण के लिए प्रावधान खाता नाम
कोई अन्य प्रावधान खाता नाम
    वसूली खाता से
(परिसम्पत्तियों पर प्रावधान का हस्तांतरण)

टिप्पणी

2. दायित्वों का हस्तांतरण करने के लिए : विभिन्न बाह्य दायित्वों के खातों को वसूली खाते में हस्तांतरित करके बंद किया जाएगा। साझेदार की पत्नी द्वारा फर्म को दिए गए ऋण को बाह्य दायित्व माना जाएगा एवं वसूली खाते के जमा में हस्तांतरित किया जाएगा। इसके लिए निम्न रोजनामचा प्रविष्टि होगी :

बाह्य दायित्व खाता	नाम	(व्यक्तिगत)
वसूली खाता से		
(बाह्य दायित्वों का हस्तांतरण)		

साझेदारों के पूंजी एवं ऋण खातों का अलग निपटान किया जाएगा। इसलिये इनकी वसूली खाते में हस्तान्तरण नहीं किया जायेगा।

3. संचित संचय एवं लाभ/हानि का लेखाकरण (Treatment of accumulated reserves and profit/loss) : संचित संचय की कोई भी राशि (जैसे सामान्य संचय), लाभ–हानि खाता (जमा) संचय कोष एवं अन्य संचय, समापन की तिथि को साझेदारों के पूंजी खातों में उनके लाभ विभाजन के अनुपात के आधार पर जमा की जाएगी। इसके लिए निम्न रोजनामचा प्रविष्टि का लेखा किया जाएगा :

लाभ हानि खाता	नाम	
सामान्य संचय खाता	नाम	
अन्य कोष नाम		
साझेदार का पूंजी खाता से (व्यक्तिगत)		
(लाभ एवं संचय का हस्तांतरण)		

4. परिसंपत्तियों के विक्रय के लिए (रोकड़ में) :

बैंक/रोकड़ खाता	नाम	(वसूली मूल्य)
वसूली खाता से		
(परिसम्पत्तियों का विक्रय)		

5. साझेदार द्वारा परिसम्पत्तियां ली जाने पर :

साझेदार का पूंजी खाता	नाम
वसूली खाता से (सहमति मूल्य)	
(साझेदार द्वारा परिसम्पत्तियां लिए जाने पर)	

बैंक/रोकड/साझेदार का पूंजी खाता	नाम
साझेदार को ऋण खाता से	
(साझेदार को ऋण का निपटारा)	

टिप्पणी

6. साझेदार द्वारा दिए गए ऋण का निपटारा :

साझेदार का ऋण खाता नाम
    बैंक/रोकड़/साझेदार का पूंजी खाता से
(साझेदार द्वारा दिए गए ऋण का निपटारा)

7. दायित्वों का रोकड़ भुगतान :

वसूली खाता नाम
    रोकड़ खाता से
(दायित्वों का भुगतान)

8. साझेदार द्वारा दायित्वों का भुगतान :

वसूली खाता नाम
    साझेदार का पूंजी खाता से
(साझेदार द्वारा दायित्व लेने पर)

गैर-अभिलेखित परिसम्पत्तियों एवं दायित्वों का लेखाकरण (Treatment of Unrecorded Assets and Liabilities)

कभी-कभी कुछ परिसम्पत्तियां ऐसी भी होती हैं जिनको पूर्णतया पिछले वर्षों में अपलिखित किया जा चुका है अतः उनको स्थिति विवरण में नहीं दिखाया जाता है लेकिन प्रत्यक्ष में वे परिचालन के लिए विद्यमान हैं। उदाहरण के लिए, एक पुराना कम्प्यूटर है जो कि अभी भी कार्य करने की स्थिति में है लेकिन इसका बहियों में मूल्य शून्य है। इसी प्रकार कुछ दायित्व ऐसे होते हैं जिनको स्थिति विवरण में नहीं दिखाया गया है लेकिन ये अभी तक विद्यमान हैं। उदाहरण के लिए बैंक से भुनाए गए विपत्र, जिनका निरादरण हो जाता है लेकिन समापन पर फर्म द्वारा भुगतान के उद्देश्य से ले लिए जाते हैं।

यह ध्यान रहे कि गैर-अभिलेखित परिसम्पत्तियों को कभी भी वसूली खाते के नाम पक्ष में हस्तांतरित नहीं किया जाएगा, लेकिन उनके वसूली मूल्य की राशि जो कि उसके विक्रय से प्राप्त होगी, अधिलाभ प्रकृति के कारण वसूली खाते में नियम के अनुसार जमा की जाएगी। इसी प्रकार गैर अभिलेखित दायित्वों को वसूली खाते में हस्तांतरित करने की आवश्यकता नहीं है। इसके लिए कारण यह है कि इसका भुगतान वसूली खाते के लिए हानि है। इसको केवल भुगतान की गई मूल राशि से नाम किया जाएगा। इस स्थिति में निम्न रोजनामचा प्रविष्टियां की जाएगी :

(क) जब गैर-अभिलेखित परिसम्पत्तियों के विक्रय से कुछ राशि वसूल की जाती है:

टिप्पणी

रोकड़/बैंक खाता नाम
वसूली खाता से
(गैर-अभिलेखित परिसम्पत्तियों का विक्रय)

(ख) जब गैर-अभिलेखित परिसम्पति साझेदार द्वारा सहमति मूल्य पर ली जाती है।

साझेदार का पूंजी खता नाम
वसूली खाता से
(गैर-अभिलेखित परिसम्पत्ति को साझेदार द्वारा लिया गया)

(ग) जब गैर-अभिलेखित दायित्वों का निपटारा फर्म द्वारा किया जाता है।

वसूली खाता नाम
बैंक/रोकड़ खाता से
(गैर-अभिलेखित दायित्वों का भुगतान)

(घ) जब गैर-अभिलेखित दायित्वों को फर्म की ओर से साझेदार द्वारा भुगतान किया जाता है।

वसूली खाता नाम
साझेदार का पूंजी खाता से
(गैर-अभिलेखित दायित्वों का साझेदार द्वारा भुगतान)

वसूली व्ययों का भुगतान

(क) जब वसूली व्ययों का भुगतान फर्म द्वारा किया जाता है (फर्म द्वारा भुगतान पर) इसके लिए निम्न रोजनामचा प्रविष्टि की जाएगी :

वसूली खाता नाम
रोकड़/बैंक खाता से
(वसूली व्यय का भुगतान)

(ख) जब वसूली व्यय फर्म की ओर से साझेदार द्वारा किया जाता है। (वसूली व्ययों का साझेदार द्वारा फर्म की ओर से भुगतान) इसके लिए निम्न रोजनामचा प्रविष्टि की जाएगी :

वसूली खाता नाम
साझेदार का पूंजी खाता से
(साझेदार द्वारा फर्म की ओर से वसूली व्यय का भुगतान)

(ग) जब वसूली व्ययों का भुगतान साझेदार द्वारा किया एवं वहन किया जाता है।

साझेदार का पूंजी खाता नाम
रोकड़/बैंक खाता से
(वसूली व्ययों का भुगतान एवं वहन साझेदार द्वारा)

टिप्पणी

वसूली खाते को बंद करना

समापन पर वसूली खाता लाभ या हानि दिखा सकता है। यदि जमा पक्ष का योग नाम पक्ष के योग से अधिक होगा, तब लाभ होगा एवं इसके लिए निम्न रोजनामचा प्रविष्टि की जाएगी :

वसूली खाता		नाम
	साझेदार का पूंजी/चालू खाता से	(व्यक्तिगत)
(वसूली पर लाभों का साझेदारों के पूंजी खाते में हस्तांतरण)		

यदि नाम पक्ष का योग जमा पक्ष के योग से अधिक होगा तब हानि होगी एवं इसके लिए निम्न रोजनामचा प्रविष्टि की जाएगी :

साझेदार का पूंजी/चालू खाता		नाम
	वसूली खाता से,	
(वसूली पर हानि का पूंजी खाते में हस्तांतरण)		

वसूली खाते का प्रारूप

वसूली खाता

नाम जमा

विवरण	*(₹)*	*विवरण*	*(₹)*
सभी परिसम्पत्तियां खाता (पुस्तक मूल्य) (रोकड़ एवं बैंक के अतिरिक्त)		**सभी बाह्य दायित्व खाता (पुस्तक मूल्य)**	
रोकड़/बैंक खाता (बाह्य दायित्वों के भुगतान पर)		**रोकड़/बैंक खाता** (विभिन्न परिसम्पत्तियों के विक्रय से वसूल राशि)	
साझेदार का पूंजी खाता (साझेदार द्वारा दायित्व का भुगतान करने पर)		साझेदार का पूंजी खाता (यदि परिसम्पत्ति साझेदार द्वारा ली गई)	
रोकड़/बैंक खाता (वसूली पर व्यय)		**साझेदार का पूंजी खाता** (वसूली पर हानि का हस्तांतरण)	
साझेदार का पूंजी खाता (वसूली व्यय का भुगतान साझेदार द्वारा करने पर)			
साझेदार का पूंजी खाता (वसूली पर लाभ का हस्तांतरण)			

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 25.2

नीचे कुछ कथन दिए गए हैं इनमें से कुछ कथन सत्य हैं एवं कुछ कथन असत्य हैं। सत्य कथन के लिए 'स' एव असत्य कथन के लिए 'अ' लिखें।

i. समापन के समय रोकड़ एवं बैंक सहित सभी खातों का हस्तांतरण वसूली खाते में किया जाता है।

ii. फर्म के समापन पर फर्म की व्यापारिक गतिविधियों बंद हो जाती हैं।

iii. वसूली खाता बनाने के पश्चात्, वसूली पर लाभ एवं हानि को साझेदारों के पूंजी खातों में हस्तांतरित किया जाता है।

iv. गैर-अभिलेखित परिसम्पत्ति के विक्रय से वसूल राशि का लेखा वसूली खाते में किया जाता है।

v. सामान्य संचय का शेष साझेदारों के पूंजी खातों में हस्तांतरित कर दिया जाता है।

vi. साझेदार द्वारा फर्म की ओर से किए गए वसूली व्ययों का लेखा वसूली खाता एवं साझेदार के पूंजी खाते में किया जाता है।

25.3 साझेदार का पूंजी खाता एवं रोकड़/बैंक खाता

साझेदारों के पूंजी खातों से संबंधित सभी समायोजन, एवं वसूली पर लाभ या हानि का हस्तांतरण साझेदारों के पूंजी खातों में करने के पश्चात् पूंजी खातों को निम्न प्रकार से बंद किया जा सकता है :

(क) यदि साझेदार का पूंजी खाता नाम शेष दिखाता है तब साझेदार आवश्यक रोकड़ लाएगा। इसके लिए निम्न रोजनामचा प्रविष्टि की जाएगी :

बैंक/रोकड़ खता नाम

साझेदार का पूंजी खाता से

(साझेदार द्वारा रोकड़ लाने पर)

(ख) यदि साझेदार का पूंजी खाता जमा शेष दिखाता है तब उसको आवश्यक राशि का भुगतान किया जाएगा। इसके लिए निम्न रोजनामचा प्रविष्टि की जाएगी :

साझेदार का पूंजी खाता नाम

रोकड़/बैंक खाता से

(साझेदार को रोकड़ का भुगतान)

टिप्पणी

रोकड़/बैंक खाता बनाना

साझेदारों के पूंजी खाते बंद करने के पश्चात् बैंक खाता बनाया जाता है एवं फर्म के समापन पर साझेदारों द्वारा लाई गई रोकड़ सहित बैंक/रोकड़ से संबंधित सभी प्रविष्टियों की इस खाते में खतौनी की जाती है। साझेदारों के पूंजी खातों को बैंक से भुगतान करके बंद किया जाता है एवं इसके बाद बैंक खाता भुगतान करके/प्राप्त करके बंद कर दिया जाता है। इस प्रकार सभी खातों को बंद कर दिया जाता है। यदि रोकड़/बैंक खाता कुछ शेष नहीं दिखाता तब यह दर्शाता है कि फर्म के समापन पर सभी खातों को नियमानुसार बंद किया गया है।

उदाहरण 1

अरुण और सीमा एवं फर्म में बराबर के साझेदार है। वे 31 दिसंबर, 2014 को फर्म के समापन का निर्णय लेते हैं। स्थिति विवरण निम्न प्रकार से है :

दिसंबर 31, 2014 को स्थिति विवरण

दायित्व		*(₹)*	*परिसम्पत्तियां*	*(₹)*
विविध लेनदार		54,000	बैंक में रोकड़	22,000
संचय कोष		20,000	विविध देनदार	24,000
ऋण		80,000	स्टॉक	84,000
पूंजी			फर्नीचर	50,000
अरुण	1,20,000		संयत्र	94,000
सीमा	1,20,000	2,40,000	पट्टाकृत भूमि (Leasehold land)	1,20,000
		3,94,000		3,94,000

परिसम्पत्तियों से निम्न वसूली हुई :

	₹
पट्टाकृत भूमि	1,44,000
फर्नीचर	45,000
स्टॉक	81,000
संयन्त्र	96,000
विविध देनदार	21,000

लेनदारों को ₹ 51,000 का भुगतान कर पूर्ण निपटान किया गया। वसूली व्यय ₹6,000 है।

टिप्पणी

फर्म की पुस्तकों को बंद करते हुए वसूली खाता, बैंक खाता, साझेदारों के पूंजी खाते तैयार करें।

हल

अरुण और सीमा की बहियां

वसूली खाता

नाम जमा

विवरण		(₹)	विवरण		(₹)
परिसम्पत्तियों का हस्तांतरण			विविध लेनदार		54,000
विविध देनदार	24,000		ऋण		80,000
संयन्त्र	94,000		बैंक		
स्टॉक	84,000		विविध देनदार	21,000	
पट्टाकृत भूमि (Leasehold land)	1,20,000		संयंत्र	96,000	
			स्टॉक	81,000	
फर्नीचर	50,000	3,72,000	पट्टाकृत भूमि	1,44,000	
बैंक			फर्नीचर	45,000	3,87,000
लेनदार	51,000				
ऋण	80,000				
वसूली व्यय	6,000	1,37,000			
लाभ का हस्तांतरण :					
अरुण की पूंजी	6,000				
सीमा की पूंजी	6,000	12,000			
		5,21,000			5,21,000

पूँजी खाते

नाम जमा

विवरण	अरूण (₹)	सीमा (₹)	विवरण	अरूण (₹)	सीमा (₹)
बैंक	1,36,000	1,36,000	शेष आ/ला.	1,20,000	1,20,000
			संचय कोष	10,000	10,000
			वसूली (लाभ)	6,000	6000
	1,36,000	1,36,000		1,36,000	1,36,000

टिप्पणी

बैंक खाता

नाम जमा

विवरण	(₹)	विवरण	(₹)
शेष आ/ला.	22,000	वसूली खाता	1,37,000
वसूली खाता	3,87,000	अरूण की पूँजी	1,36,000
		सीमा की पूँजी	1,36,000
	4,09,000		4,09,000

उदाहरण 2

सोनिया एवं मयंक साझेदार हैं जो लाभ का विभाजन 3 : 2 में करते हैं। दिसंबर 31, 2014 को स्थिति विवरण निम्न प्रकार से है :

दिसंबर 31, 2014 को स्थिति विवरण

दायित्व	(₹)	परिसंपत्तियां		(₹)
लेनदार	28,000	हस्तस्थ रोकड़		10,500
देय विपत्र	20,000	बैंक में रोकड़		30,000
लाभ हानि खाता	13,500	स्टॉक		7,500
सोनिया की पूँजी	32,500	विविध देनदार	21,500	
मयंक की पूँजी	11,500	*घटा:* डूबत ऋण के लिये प्रावधान	500	21,000
		भूमि एवं भवन		36,500
	1,05,500			1,05,500

दिसंबर 31,2014 को फर्म का समापन हआ। निम्न सूचनाओं के साथ फर्म की लेखा पुस्तकों को बंद कीजिए :

(i) देनदारों से 5% बट्टे पर वसूली हुई।

(ii) स्टॉक से ₹ 7,000 वसूल हुए।

(iii) भवन से ₹ 42,000 वसूल हुए।

(iv) वसूली व्यय की राशि ₹ 1,500 है।

(v) लेनदार एवं देय विपत्रों का पूर्ण भुगतान किया गया।

आवश्यक खाते तैयार कीजिए।

टिप्पणी

हल :

सोनिया एवं मयंक की पुस्तके

वसूली खाता

नाम जमा

विवरण		(₹)	विवरण		(₹)
परिसंपत्तियों का हस्तांतरण			डूबत ऋण के लिये प्रावधान		500
स्टॉक	7,500		लेनदार		28,000
विविध देनदार	21,500		देय विपत्र		20,000
भूमि व भवन	36,500	65,500	बैंक		
बैंक			देनदार	20,425	
लेनदार	28,000		स्टॉक	7,000	
देय विपत्र	20,000		भूमि व भवन	42,000	69,425
वसूली व्यय	1,500	49,500			
लाभ का हस्तांतरण (3 : 2)					
सोनिया की पूँजी	1,755				
मयंक की पूँजी	1,170	2,925			
		1,17,925			1,17,925

पूँजी खाता

नाम जमा

विवरण	सोनिया (₹)	मयंक (₹)	विवरण	सोनिया (₹)	मयंक (₹)
बैंक	42,355	18,070	शेष आ/ला	32,500	11,500
			लाभ हानि खाता	8,100	5,400
			वसूली (लाभ)	1,755	1,170
	42,355	18,070		42,355	18,070

रोकड़ एवं बैंक खाता

नाम जमा

विवरण	(₹)	विवरण	(₹)
शेष आ/ले	30,000	वसूली	49,500
हस्तथ रोकड़	10,500	सोनिया की पूँजी	42,355
वसूली	69,425	मयंक की पूँजी	18,070
	1,09,925		1,09,925

टिप्पणी

उदाहरण 3

तनु, मनु एवं चेतन साझेदार हैं जो लाभ का विभाजन क्रमशः 1/2, 1/3, 1/6 के अनुपात में करते हैं वे दिसम्बर 31, 2014 को साझेदारी का समापन करते हैं जब फर्म का स्थिति विवरण निम्न प्रकार से है :

दिसम्बर 31, 2014 को स्थिति विवरण

दायित्व		*(₹)*	*परिसंपत्तियां*	*(₹)*
विविध लेनदार		30,000	बैंक	37,500
देय विपत्र		25,000	विविध देनदार	58,000
मनु से ऋण		40,000	स्टॉक	39,500
पूँजी			विनियोग	42,000
तनु	90,000		मशीनरी	48,000
मनु	75,000		पट्टामुक्त संपत्ति	90,000
चेतन	55,000	2,20,000	(Freehold property)	
		3,15,000		3,15,000

मनु ने मशीनरी को ₹ 45,000 में ले लिया। तनु ने विनियोग को ₹ 40,000 में लिया एवं पट्टामुक्त संपत्ति को चेतन ने ₹ 95,000 में लिया। शेष परिसम्पत्तियों से निम्न वसूली हुई : विविध देनदार ₹ 56,500 एवं स्टॉक ₹ 36,500। विविध लेनदारों का निपटान 5% बट्टे पर किया गया। देय विपत्र को चेतन ने ₹ 23,000 में लिया। ₹ 3,000 के दायित्वों जिनको बहियों में दिखाया नहीं गया, का भी भुगतान कर दिया गया। एक कार्यालय का कम्प्यूटर, जिसको लेखा पुस्तकों में नहीं दिखाया गया था, से ₹ 9,000 वसूल हुए।

वसूली व्यय की राशि ₹ 3,000 है।

वसूली खाता, साझेदारों के पूंजी खाते बैंक खाता तैयार करें।

हल

तनु मनु एवं चेतन की बहियां

वसूली खाता

नाम जमा

विवरण		*(₹)*	*विवरण*	*(₹)*
परिसम्पत्तियों का हस्तांतरण			विविध लेनदार	30,000
विविध देनदार	58,000		देय विपत्र	25,000
स्टॉक	39,500		तनु की पूँजी (विनियोग)	40,000

टिप्पणी

मशीनरी	48,000		मनु की पूँजी (मशीनरी)		45,000
विनियोग	42,000		चेतन की पूँजी		95,000
पट्टामुक्त संपत्ति	90,000	2,77,500	(पट्टामुक्त संपत्ति)		
चेतन की पूँजी		23,000	बैंक		
(देय विपत्र)			विभिन्न देनदार	56,500	
बैंक			स्टॉक	36,500	
विविध लेनदार	28,500		कम्प्यूटर	9,000	1,12,000
दायित्व (अलिखित)	3,000				
वसूली व्यय	6,000	37,500			
लाभों का हस्तांतरण					
तनु की पूँजी	4,500				
मनु की पूँजी	3,000				
चेतन की पूँजी	1,500	9,000			
		3,47,000			3,47,000

पूंजी खाता

नाम — जमा

विवरण	*तनु (₹)*	*मनु (₹)*	*चेतन (₹)*	*विवरण*	*तनु (₹)*	*मनु (₹)*	*चेतन (₹)*
वसूली (परिसम्पत्तियां)	40,000	45,000	95,000	शेष आ/ला	90,000	75,000	55,000
बैंक	54,500	33,000	—	वसूली (परिसम्पत्तियां)	—	—	23,000
				वसूली (लाभ)	4,500	3,000	1,500
				बैंक	—	—	15,500
	94,500	78,000	95,000		94,500	78,000	95,500

बैंक खाता

नाम — जमा

विवरण	*(₹)*	*विवरण*	*(₹)*
शेष आ/ला.	37,500	वसूली	37,500
वसूली	1,12,000	मनु का ऋण	40,000
चेतन की पूँजी	15,500	तनु की पूँजी	54,500
		मनु की पूँजी	33,000
	1,65,000		1,65,000

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 25.3

I. निम्न में से कौन सी परिसम्पतियां गैर-अभिलेखित मानी जाएंगी :

(i) पुराने फर्नीचर का विक्रय।

(ii) स्थिति विवरण में दिखाई गई ख्याति।

(iii) पिछले वर्ष अपलिखित डूबत ऋण की वसूली

(iv) विनियोगों का विक्रय

(v) पिछले वर्ष अपलिखित पुराने कम्प्यूटर का विक्रय

II. निम्न में से कौन सा दायित्व गैर-अभिलेखित माना जाएगा।

(i) बैंक से बट्टे पर भुनाए गए विपत्र का अनादरण।

(ii) बैंक ऋण का भुगतान।

(iii) स्टॉक के लिए क्रय किए गए माल के लेनदार।

(iv) फर्म के विरूद्ध विवाद का निपटारा।

(v) अदत बिलों का भुगतान।

आपने क्या सीखा

- जब फर्म व्यवसाय को बंद करने का निर्णय लेती है एवं फर्म द्वारा कोई भी व्यापारिक गतिविधियां नहीं की जाती हैं तो यह फर्म का समापन कहलाएगा।
- फर्म का समापन साझेदारी के समापन से भिन्न है। फर्म के समापन का अर्थ है फर्म अपने व्यापार को बंद कर देती है और उसका अंत हो जाता है जब कि साझेदारी के समापन का अर्थ है पहले साझेदारी समझौते का अंत एवं साझेदार के प्रवेश, सेवानिवृत्ति एवं मृत्यु के कारण फर्म का पुनर्गठन होना।
- फर्म के समापन पर लेखा पुस्तकों को बंद कर दिया जाता है। सभी परिसम्पत्तियों एवं दायित्वों का हस्तांतरण जिस खाते में किया जाता है वह वसूली खाता कहलाता है। इस खाते में परिसम्पत्तियों की वसूली एवं दायित्वों के भुगतान का अभिलेखन किया जाता है।
- जब साझेदार फर्म के व्यावसाय को बंद करने का निर्णय लेते हैं तब यह आवश्यक हो जाता है कि वे अपने खातों का निपटारा करें। इस उद्देश्य के लिए सभी

टिप्पणी

परिसम्पत्तियों को बेचा जाता है (रोकड़ और बैंक शेष के अतिरिक्त) ताकि अपने विरुद्ध दावों का निपटारा किया जा सके।

- गैर-अभिलेखित परिसम्पत्तियों को कभी भी वसूली खाते में हस्तांतरित नहीं किया जाता क्योंकि इसके विक्रय से प्राप्त राशि अधिलाभ है एवं नियमानुसार केवल वसूली खाते को जमा किया जाएगा।
- साझेदारों के पूंजी खातों को बैंक खाते से भुगतान करके बंद कर दिया जाएगा एवं इसी प्रकार बैंक खाता भुगतान करने व प्राप्त करने पर बंद हो जाएगा।

पाठान्त प्रश्न

1. निम्न प्रश्नों का उत्तर एक वाक्य में दीजिए :
   (क) साझेदारी फर्म के समापन का क्या अर्थ है?
   (ख) वसूली खाता क्यों बनाया जाता है?
   (ग) गैर–अभिलेखित दायित्वों की स्थिति में कौन सी रोजनामचा प्रविष्टि की जाएगी?
   (घ) जब वसूली व्यय का भुगतान व उसको वहन साझेदार द्वारा किया जाता है तब कौन सी रोजनामचा प्रविष्टि की जाएगी?
2. साझेदारी फर्म का समापन एवं साझेदारी के समापन में अंतर कीजिए।
3. किन परिस्थितियों में न्यायालय द्वारा साझेदारी फर्म का समापन किया जा सकता है?
4. सुमित एवं अनीष फर्म में बराबर के साझेदार हैं। वे दिसंबर 31, 2014 को फर्म का समापन करने का निर्णय लेते हैं जब स्थिति विवरण इस प्रकार से है :

दिसंबर 31, 2014 को स्थिति विवरण

दायित्व		*(₹)*	*परिसंपतियाँ*	*(₹)*
विविध लेनदार		30,000	बैंक में रोकड़	7,000
संचय कोष		7,000	विविध देनदार	23,000
देय विपत्र		30,000	स्टॉक	42,000
पूँजी			फर्नीचर	35,000
सुमित	70,000		संयंत्र	40,000
अनीष	60,000	1,30,000	पट्टाकृत भूमि (Leasehold land)	50,000
		1,97,000		1,97,000

टिप्पणी

परिसम्पत्तियों से वसूली इस प्रकार है :

	रु.
पट्टाकृत भूमि (leasehold land)	62,000
फर्नीचर	30,500
स्टॉक	40,500
संयन्त्र	48,000
विविध देनदार	22,500

विविध लेनदारों को ₹ 29,500 में पूर्ण निपटान किया गया। देय विपत्र को 5% कम भुगतान किया गया। वसूली व्यय की राशि ₹ 2,500 है।

फर्म की बहियों को बंद करते हुए वसूली खाता, बैंक खाता, साझेदारों के पूंजी खाते बनाइए।

5. आशू एवं हिमानी साझेदार हैं तथा लाभ–हानि का विभाजन 3:2 के अनुपात में करते हैं। वे दिसंबर 31, 2014 को फर्म का समापन करने का निर्णय लेते हैं। इस तिथि को उनका स्थिति विवरण निम्न प्रकार से है।

दिसंबर 31, 2014 को स्थिति विवरण

दायित्व		*(₹)*	*परिसंपतियाँ*	*(₹)*
पूँजी			भवन	90,000
आशू	1,00,000		मशीनरी	60,000
हिमानी	92,000	1,92,000	फर्नीचर	10,000
लेनदार		88,000	स्टॉक	24,000
बैंक अधिविकर्ष		20,000	विनियोग	50,000
			देनदार	48,000
			हस्तस्थ रोकड़	18,000
		3,00,000		3,00,000

आशु ने भवन को ₹ 98,000 में ले लिया एवं हिमानी ने मशीन एवं फर्नीचर को ₹ 70,000 के मूल्य पर लिया। आशु लेनदारों को भुगतान करने के लिए सहमत हुआ एवं हिमानी बैंक अधिविकर्ष को देने के लिए सहमत हुई। स्टॉक एवं विनियोग को दोनों साझेदारों ने लाभ विभाजन अनुपात में ले लिया। लेनदारों से ₹ 46,000 वसूल हुए। वसूली व्यय की राशि ₹ 3,000 है।

आवश्यक खाते तैयार करें।

टिप्पणी

6. तरुण, नीरू एवं विकास लाभ का विभाजन 3 : 2 : 1 के अनुपात में करते हैं दिसंबर 31, 2014 को उनका स्थिति विवरण निम्न प्रकार से है।

दिसंबर 31, 2014 को स्थिति विवरण

दायित्व		*(₹)*	*परिसंपतियाँ*	*(₹)*
पूँजी :			संयंत्र	80,000
तरूण	90,000		देनदार	70,000
नीरू	1,00,000		फर्नीचर	22,000
विकास	80,000	2,70,000	स्टॉक	70,000
लेनदार		60,000	विनियोग	60,000
देय विपत्र		30,000	प्राप्य विपत्र	46,000
संचय		20,000	हस्तस्थ रोकड़	32,000
		3,80,000		3,80,000

इस तिथि को फर्म का समापन हो गया। परिसम्पत्तियों से वसूली निम्न प्रकार है संयन्त्र ₹ 85,000; देनदार ₹ 69,000; फर्नीचर ₹ 20,000 स्टॉक पुस्तक मूल्य का 95% विनियोग ₹ 86,000 एवं प्राप्य विपत्र ₹ 31,000 एवं इलेक्ट्रॉनिक कार्यालय टाईपराइटर, जिसको बहियों में नहीं दिखाया गया, से ₹ 9,000 वसूल हुए। वसूली व्यय की राशि ₹ 4,500 है विकास ने लेनदारों को पुस्तक मूल्य पर ले लिया।

वसूली खाता, पूंजी खाते एवं रोकड़ खाता बनाइए।

7. दिसंबर 31, 2014 को अनू और हेमा का स्थिति विवरण निम्न प्रकार से हैं :

दिसंबर 31, 2014 को स्थिति विवरण

दायित्व		*(₹)*	*परिसंपतियाँ*	*(₹)*
विविध देनदार		42,000	बैंक में रोकड़	13,000
देय विपत्र		26,000	विविध देनदार	50,000
हेमा से ऋण		20,000	स्टॉक	40,000
संचय कोष		6,000	प्राप्य विपत्र	28,000
डूबत ऋण के लिये प्रावधान		2,000	मशीनरी	60,000
पूँजी			विनियोग	30,000
अनु	90,000		फिक्सचर	27,000
हेमा	62,000	1,52,000		
		2,48,000		2,48,000

टिप्पणी

दिसंबर 31, 2014 को फर्म का समापन हो गया एवं परिसम्पत्तियों से वसूली और दायित्वों का निपटारा निम्न प्रकार हुआ :

(क) परिसम्पत्तियों से वसूली निम्न है :

	(₹)
विविध देनदार	48,000
स्टॉक	38,000
प्राप्य विपत्र	27,000
मशीनरी	62,000

(ख) हेमा ने विनियोग को ₹ 36,000 के सहमत मूल्य पर लिया एवं लेनदारों का भुगतान करने के लिए सहमत हुई। देय विपत्रों को 3% कम भुगतान किया गया।

(ग) फिक्सचर का कुछ मूल्य प्राप्त नहीं हुआ।

(घ) वसूली के लिए ₹ 2,200 व्यय किए गए।

फर्म के समापन पर रोजनामचा प्रविष्टियां करें और वसूली खाता, बैंक खाता एवं साझेदारों के पूंजी खाते तैयार करें।

8. रोहित एवं टीना फर्म में साझेदार हैं। लाभ का विभाजन 3 : 2 के अनुपात में करते हैं। वे मार्च 31, 2014 को फर्म के समापन का निर्णय लेते हैं, जब फर्म का स्थिति विवरण निम्न प्रकार से है :

मार्च 31, 2014 को स्थिति विवरण

दायित्व		*(₹)*	*परिसंपतियाँ*	*(₹)*
पूँजी :			मशीनरी	80,000
रोहित	80,000		विनियोग	60,000
टीना	90,000	1,70,000	स्टॉक	22,000
विविध लेनदार		70,000	विविध देनदार	80,000
संचय		10,000	बैंक में रोकड़	8,000
		2,50,000		2,50,000

परिसम्पत्तियों एवं दायित्वों का निपटान निम्न है :

(क) मशीनरी लेनदारों को उनके खातों के पूर्ण भुगतान के लिए दी गई। स्टॉक रोहित ने ₹ 19,000 में ले लिया।

(ख) विनियोग को टीना ने पुस्तक मूल्य पर ले लिया। ₹ 50,000 पुस्तक मूल्य के विविध देनदारों को रोहित ने 10% कम पर ले लिया, और शेष देनदारों से ₹ 28,000 वसूल हुए।

टिप्पणी

(ग) ₹ 2,000 वसूली व्यय का भुगतान रोहित द्वारा किया गया फर्म की पुस्तकों को बंद करते हुए आवश्यक खाते तैयार करें।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

25.1 (i) गैर-कानूनी, (ii) समापन, (iii) फर्म, साझेदारी, (iv) समापन, (v) न्यायालय, (vi) समझौता

25.2 (i) अ (ii) स (iii) स (iv) स (v) स (vi) स

25.3 I. (iii) एवं (v)
II. (i) एवं (iv)

पाठांत प्रश्नों के उत्तर

4. वसूली पर लाभ ₹ 13,000 रोकड़ खाते का योग ₹ 2,10,500
5. वसूली पर लाभ ₹ 2,000 रोकड़ खाते का योग ₹ 64,000
6. वसूली पर लाभ ₹ 14,000 रोकड़ खाते का योग ₹ 3,98,500
7. वसूली पर हानि ₹ 23,420 रोकड़ खाते का योग ₹ 1,88,000
8. वसूली पर हानि ₹ 92,000 रोकड़ खाते का योग ₹ 83,800